# विषय-सूची


**प्राक्कथन** 3-14

पहला अध्याय : **बड़ीसादड़ी ठिकाना** 27-37

भौगोलिक स्थिति : सामान्य परिचय

पहाड़

नदियां

झीलें

कस्बा

आबादी

भूमि

आमदनी

बीड़ और जंगल

खान एवं उद्योग

सड़कें

डाकखाना

न्याय

पुलिस-प्रबंध

शिक्षा

अस्पताल

पंचायत बोर्ड

दाण

शिकमी जागीरदार

हलवदिया परिवार
धार्मिक आचरण एवं मान्यता

दूसरा अध्याय : **झालावंश की उत्पत्ति** 38-52
चन्द्रवंशी
मखवाना (मकवाना) वंश - नाम
वंश का झाला नामकरण
कुंडमाल प्रथम शासक
हरपाल देव - पाटड़ी राजधानी
ध्रांगध्रा महाराजा मेघराज जी का मत
कोवा (कीकावटी) राजधानी
राणक देव का उत्तराधिकारी होना– अज्जा का हलवद त्याग (1500 ई.)

तीसरा अध्याय : **अज्जा का मेवाड़ आना और खानवा की लड़ाई** (1527 ई.) में आत्म-बलिदान 53-65
मारवाड़ में अस्थायी निवास
मेवाड़ में अजमेर की जागीर प्राप्त होना
मेवाड़ की जागीर-व्यवस्था
मेवाड़ का गृह-कलह
महाराणा सांगा द्वारा जागीर का पट्टा प्रदान करना
सांगा की लड़ाईयों में झालाओं का सहयोग
सांगा का बाबर के साथ युद्ध
सांगा का घायल होना और सेना के नेतृत्व की समस्या
अज्जा द्वारा सांगा का स्थान ग्रहण और प्राणार्पण
अज्जा के वंशजों को चिरकालिक सम्मान मिलना
अज्जा के विवाह और संतति

चौथा अध्याय : **मेवाड़ के अस्तित्व की रक्षा का संघर्ष और अज्जा की संतानों का बलिदान** 66-98
2. **राजराणा सिंहा** (1527-1535 ई.) 66-72
जागीर का उत्तराधिकारी होना

महाराणा के राज्य चिह्न धारण करने के अधिकार मिलना
महाराणा रतनसिंह द्वारा झाड़ोल का पट्टा मिलना
गुजरात के बादशाह बहादुरशाह का प्रथम आक्रमण
बहादुर शाह का दूसरा आक्रमण और राजराणा सिंहा का प्राणार्पण
राजराणा सिंहा के विवाह और संतति

3. **राजराणा आसा** (1535-1540 ई.) **73-75**
जागीर का उत्तराधिकारी होना
बनवीर द्वारा चित्तौड़गढ़ पर कब्जा करना
कुम्भलगढ़ में उदयसिंह को महाराणा बनाना
राजराणा आसा का चित्तौड़गढ़ की लड़ाई में मारा जाना
राजराणा आसा के विवाह एवं निस्संतान मृत्यु और छोटे भाई का उत्तराधिकारी होना

4. **राजराणा सुरताण** (सुरतान) सिंह प्रथम (1540-1568 ई.) **76-80**
जागीर के अधिकार मिलना
अकबर द्वारा चित्तौड़गढ़ पर आक्रमण (1567 ई.)
राजराणा द्वारा ससैन्य चित्तौड़ आना
हुसैनकुली खां द्वारा महाराणा उदयसिंह का पीछा करना
चित्तौड़गढ़ की लड़ाई में राजराणा सुरताण का मारा जाना
राजराणा सुरताण के विवाह और संतति

5. **राजराणा वीदा (मानसिंह)** —(1568-1576 ई.) **81-88**
झाड़ोल में वीदा की गद्दीनशीनी
वीदा का महाराणा प्रताप के राज्यारोहण में भाग लेना
राजपूत राज्यों के संघ का निर्णय
छापामार युद्ध-नीति
मानसिंह की मेवाड़ पर चढ़ाई
युद्ध-परिषद में राजराणा वीदा का भाग लेना
खमणोर की लड़ाई में वीदा का महाराणा प्रताप की रक्षार्थ मेवाड़ के राज्यचिह्न धारण करना और

आत्म बलिदान
राजराणा वीदा के विवाह और संतति
6. **राजराणा देदा** (1576-1611 ई.) 89-94
देदा का झाड़ोल में उत्तराधिकारी होना और महाराणा प्रताप द्वारा तलवारबन्दी
मुगल विरोधी लड़ाई में देदा का योगदान
आवरगढ़ राजधानी
राणपुर की लड़ाई में देदा का काम आना
राजराणा देदा का मूल्यांकन
राजराणा देदा के विवाह और संतति
7. **राजराणा हरिदास** (1611-1622 ई.) 95-98
उत्तराधिकार सम्बन्धी कलह
राजराणा हरिदास को कानोड़ की जागीर मिलना
हरिदास का मेवाड़ की सेना का अध्यक्ष नियुक्त होना
मेवाड़-मुगल संधि (1615 ई.) में राजराणा हरदास का योगदान (अगले अध्याय में निरन्तरित)

पांचवा अध्याय : **मुगल साम्राज्य के अधीन मेवाड़ तथा सादड़ी के झाला राजराणा** 99-145
राजराणा हरिदास (गत अध्याय से आगे) 99-106
राजराणा हरिदास का कुंवर कर्णसिंह के साथ जहांगीर के दरबार में जाना
जहांगीर की भेदनीति और महाराणा एवं कुंवर के बीच अनबन
हरिदास का भंवर जगतसिंह के संरक्षक की तरह बादशाह के दरबार में जाना और बादशाह से प्रतिष्ठा पाना
मेवाड़ दरबार में हरिदास के विरुद्ध षड्यंत्र
कुंवर रायसिंह का पिता के विरुद्ध जाने तथा कानोड़ की जागीर लेने से इन्कार
जहांगीर के दरबार में हरिदास : झाला-भूषण-मार्तण्ड का वृतान्त

हरिदास के व्यक्तित्व का मूल्यांकन
कानोड़ में सात वर्ष तक झाला-शासन
राजराणा हरिदास के विवाह और संतान

8. **राजराणा रायसिंह प्रथम** (1622-1656 ई.) **107-119**
तलवारबंदी और जागीर के अधिकार मिलना
राजराणा रायसिंह को सादड़ी ठिकाना मिलना
शाहजादे खुर्रम का सादड़ी आना
महाराणा जगतसिंह का सैन्य सहायता देना
रायसिंह को सेनापति बनाकर मुगल दरबार में भेजना
रायसिंह को मुगल दरबार में मंसब मिलना
रायसिंह का कांगड़ा-विजय में भाग लेना
रायसिंह का कंधार एवं काबुल की लड़ाईयों में भाग लेना
रायसिंह की मंसब में इजाफे
श्री द्वारिकाधीश की वैष्णव मूर्ति को सादड़ी में लाना और महाराणा जगतसिंह द्वारा शरण देना (1646 ई.)
शाहजहाँ द्वारा मेवाड़ पर सेना भेजना और रायसिंह की वतनपरस्ती
रायसिंह का देहान्त और मूल्यांकन
सादड़ी कुंवर की प्रतिष्ठा में वृद्धि
राजराणा रायसिंह के विवाह और संतति

9. **राजराणा सुरताणसिंह दूसरा** (1656-1673 ई.) **120-126**
तलवारबंदी और जागीर के अधिकार मिलना
महाराणा द्वारा मेवाड़ के परगने वापस जीतने में सुरताण का भाग लेना
महाराणा राजसिंह की कूटनीति
महाराणा का चारुमती से विवाह और सुरताण का सैन्यदल लेकर महाराणा के साथ जाना
महाराणा का वागड़ विजय करना और सुरताण द्वारा देवलिया रावत की महाराणा से सुलह कराना

मेवल के मीणों को दबाने में सुरताण की सहायता
राजराणा सुरताण का मूल्यांकन : विवाह और संतति
10. **राजराणा चन्द्रसेन** (1673-1703 ई.) **127-137**
चन्द्रसेन का जागीर के अधिकार मिलना
महाराणा राजसिंह की स्वातंत्र्य-चेष्टा
चन्द्रसेन का राजकुमार जयसिंह के साथ बादशाह औरंगजेब के पास जाना
महाराणा द्वारा अजीतसिंह को शरण देना : औरंगजेब की मेवाड़ पर चढ़ाई
चन्द्रसेन का सेना लेकर उदयपुर पहुँचना
मुगल सेना की पराजय : चन्द्रसेन का वीरता-प्रदर्शन
बादशाह द्वारा सुलह के प्रयास
चन्द्रसेन का संधि-वार्ता में भाग लेना
सिरोही पर आक्रमण के समय सादड़ी कुंवर का मारा जाना
पिता-पुत्र के कलह में चन्द्रसेन द्वारा महाराणा का पक्ष लेना
चन्द्रसेन द्वारा भीलों का दमन
महाराणा अमरसिंह की गद्दीनशीनी और उसकी चन्द्रसेन की प्रति नाराजगी
चन्द्रसेन का देहान्त और मूल्यांकन
चन्द्रसेन के विवाह और संतति
11. **राजराणा कीर्तिसिंह** (कीरतसिंह) प्रथम (1703-1743 ई.) **138-145**
कीर्तिसिंह का उत्तराधिकारी होना
वागड़ पर महाराणा की चढ़ाई : राजराणा कीर्तिसिंह की सहायता
दौलतसिंह को ताणा की जागीर मिलना
महाराणा अमरसिंह द्वारा सामंतों की श्रेणियां कायम करना—सादड़ी राजराणा को प्रथम स्थान
जोधपुर और जयपुर के राजाओं का महाराणा की सहायता प्राप्त करने हेतु उदयपुर आना और राजराणा कीर्तिसिंह का महाराणा का सलाहकार रहना

बांदनवाड़े की लड़ाई में राजराणा का भाग लेना
राजपूताने के राजाओं के हुरड़ा सम्मेलन में कीर्तिसिंह का महाराणा का सलाहकार रहना
वागड़ से मराठों को निकालने में कीर्तिसिंह का योगदान
कीर्तिसिंह का निधन और मूल्यांकन
कीर्तिसिंह के निर्माण-कार्य
कीर्तिसिंह के विवाह और संतति

छठा अध्याय : **पतन एवं विघटन-काल** **146-167**

12. **राजराणा रायसिंह दूसरा** (1743-1761 ई.) **146-152**
तलवारबन्दी और जागीर के अधिकार मिलना
मेवाड़ में गृह-कलह : राजराणा रायसिंह का महाराणा का साथ देना
राजराणा रायसिंह द्वारा शाहपुरा राजा को उदयपुर लाना
हीता में मराठों से लड़ाई और रायसिंह का घायल होना
महाराणा प्रतापसिंह (दूसरे) की नाराजगी और रायसिंह का डूंगरपुर जाना
भीलों के विद्रोह को दबाने में सहयोग
रायसिंह का देहान्त और मूल्यांकन
रायसिंह के विवाह और संतति

13. **राजराणा सुरताणसिंह** (सुलतानसिंह) तीसरा (1761-1798 ई.) **153-161**
तलवारबंदी और जागीर के अधिकार मिलना
महाराणा अरिसिंह से विरोध
उज्जैन की लड़ाई में सिंधिया का साथ देना
मेवाड़ राज्य का विघटन
राजराणा सुरताण द्वारा महाराणा हम्मीर सिंह का साथ देना
रींछेड़ की लड़ाई में महाराणा की सहायता करना और महाराणा द्वारा उसकी प्रतिष्ठा में वृद्धि करना
महाराणा द्वारा राजराणा की सराहना

मराठों को मेवाड़ से निकालना
हड़क्याखाल की लड़ाई (1788 ई.) में राजराणा का घायल होकर मराठों की कैद में रहना
मेवाड़ पर मराठों का वर्चस्व
राजराणा सुरताण के निर्माण-कार्य और परोपकारिता
विवाह और संतति
राजराणा सुरताणसिंह का निधन और मूल्यांकन

14. **राजराणा चन्दनसिंह** (1798-1817 ई.) **162-167**
तलवारबंदी और जागीर के अधिकार मिलना
मेवाड़ राज्य और मराठे
मराठों के आक्रमण और सादड़ी का विध्वंस
मेवाड़-राज्य और अंग्रेज सरकार के बीच संधि (1818 ई.)
राजराणा चन्दनसिंह की हत्या का षड्यंत्र
देलवाड़ा कुंवर कीर्तिसिंह का गोद आना
राजराणा के विवाह

सातवां अध्याय : **मेवाड़ में ब्रिटिश प्रभुत्व** **168-249**

15. **राजराणा कीर्तिसिंह दूसरा** (1817-1865 ई.) **168-181**
अल्पायु में सादड़ी का उत्तराधिकारी होना
मेवाड़ में अंग्रेज-शासन
महाराणा और सरदारों के सम्बन्धों में परिवर्तन
सादड़ी ठिकाने की बुरी हालत
भील-उत्पात को दबाने में राजराणा का सहयोग
दाण आदि करों पर राज्य का एकाधिकार होना
उदयपुर में सादड़ी की हवेली के लिये भूमि मिलना
महाराणा सरूपसिंह के विरुद्ध सरदारों की बगावत और महाराणा द्वारा राजराणा से सहयोग का आग्रह
मेवाड़ में सती प्रथा बंद करने बाबत
बोहेड़ा पर फौजकशी
1857 ई. का जनविद्रोह और महाराणा एवं जागीरदारों

की नीति
कुंवर शिवसिंह का जमीयत लेकर अंग्रेज सरकार की मदद करना
निम्बाहेड़ा पर कब्जे में शिवसिंह द्वारा वीरता-प्रदर्शन
बानसी रावत के साथ समझौता
कीर्तिसिंह का देहान्त और मूल्यांकन
राजराणा के विवाह एवं संतति
16. **राजराणा शिवसिंह** (1865-1883 ई.) **182-195**
तलवारबंदी और जागीर के अधिकार मिलना
पोलिटिकल एजेंट द्वारा शिवसिंह की प्रशंसा
महाराणा के साथ अजमेर दरबार में जाना
तीर्थयात्रा
महाराणा शंभुसिंह को जी.सी.एस.आई. का खिताब मिलना
मेवाड़ में शासन सुधार
सादड़ी जागीर में दीवानी एवं फौजदारी कानून लागू होना
महाराणा और जागीरदारों में मतभेद
राजराणा द्वारा भतीजे रायसिंह को गोद लेना
बागोर ठिकाने पर फौजकशी
नाथद्वारा ठिकाने पर फौजकशी
चित्तौड़ दरबार में कुंवर रायसिंह का भाग लेना
महाराणा सज्जनसिंह का सादड़ी में मेहमान होना और शिवसिंह को 'राजरणा' का खिताब मिलना
पदवी को 'राजराणा' लिखने का आग्रह
राजराणा शिवसिंह का देहान्त और कृतित्व
निर्माण-कार्य
राजराणा के विवाह
17. **राजराणा रायसिंह तीसरा** (1883-1897 ई.) **196-206**
रायसिंह का गोद आना
प्रारम्भिक शिक्षा

तलवारबन्दी और जागीर के अधिकार मिलना
ठिकाना-प्रशासन का आधुनीकरण
जिला-प्रशासन
महाराणा फतहसिंह की गद्दीनशीनी का दरबार
देलवाड़ा शासन-समिति का सदस्य नियुक्त होना
कुंवर दुलहसिंह को गोद लेना, महाराणा द्वारा स्वीकृति
राजराणा रायसिंह का व्यक्तित्व एवं कृतित्व
धर्मनिष्ठता एवं निर्माण-कार्य
राजराणा के विवाह एवं संतति

18. **राजराणा दुलहसिंह** (1897-1936 ई.) 207-232
दुलहसिंह की नाबालिगी
ठिकाने पर राज्य (खालसा) का अधिकार और उठंत्री
महाराणा द्वारा कैद—नजराणे की मांग और तलवारबंदी रुकी
ठिकाने में राज्य की मुंसरमात कायम होना
कैदनजराणे के मामले में ए.जी.जी. का ठिकाने के पक्ष में राय
मातमपुर्सी होना किन्तु तलवारबंदी नहीं
अकाल-राहत-कार्य
अंग्रेज सरकार द्वारा राजराणा को चांदी का मेडल देना
प्रथम महायुद्ध में राजराणा को सैनिकों की भर्ती के कार्य हेतु नामजद करना
दरबार में बैठक का महत्व : सादड़ी की प्रथम बैठक जारी रहना
महाराणा के जन्मदिन के दरबार में सादड़ी की बैठक के सम्बंध में विवाद और राजराणा का अडिग रहना
जागीरों द्वारा कर्ज लेने के सम्बंध में पाबंदी और सादड़ी ठिकाना
राजराणा द्वारा किसान आंदोलनकारियों से समझौता

जागीरों में शराबबंदी
सादड़ी उमराव द्वारा महाराजाधिराज, महाराणा एवं राजराणा उपाधियों के प्रयोग पर विवाद
ठिकाने के न्यायिक अधिकारों का निर्धारण
चाकरी को नकदी (रोकड़-भुगतान) में बदलना
ठिकानों के जंगलों के संरक्षण एवं आय पर राज्य का नियंत्रण
राजराणा का व्यक्तित्व एवं मूल्यांकन
राजराणा दूलहसिंह का विवाह और संतति

19. **राजराणा कल्याणसिंह** (1936-1944 ई.) **233-244**
ठिकाने का उत्तराधिकारी होना
मेयो कॉलेज में शिक्षा
अजमेर में कुंवर कल्याणसिंह द्वारा महाराणा भूपाल सिंह का स्वागत
विदेश-यात्रा और राजराणा में राष्ट्रीय भावनाओं का उदय
सादड़ी पर कैदखालसा और उठंत्री
तलवारबंदी और नजराणा
व्यापारियों का बलिदान विरोधी आंदोलन
सादड़ी में प्रजामंडल का आंदोलन और राजराणा की नीति
वायसराय लिनलिथगो का उदयपुर में स्वागत
महकमाखास को लागतों सम्बंधी शिकायतें
ठिकाने में ब्राह्मण-वर्चस्व और मनमानी के विरुद्ध शिकायत
राजराणा के प्रजाहितैषी कार्य
महाराजकुमार की दरबार में पद-वृद्धि
राजराणा के विवाह और संतति

20. **राजराणा हिम्मतसिंह** **245-249**
शिक्षा

ठिकाने में मुंसरभात कायम होना
तलवारबंदी और ठिकाने के अधिकार मिलना
राजस्थान राज्य में ठिकाने का विलय
राजराणा का योगदान
विवाह और संतति

परिशिष्ट : 250-322

1. मेले, त्यौहार एवं उत्सव 250-253
2. झालावंश-गोत्रोच्चार 254
3. बड़ीसादड़ी राजराणा के राह-रस्म, लवाजमा, बैठक, वगैरा 255-258
4. बड़ीसादड़ी ठिकाने के शिकमी जागीरदारों के ठिकाने 259-260
5. बड़ीसादड़ी ठिकाने की आय के साधन 261-263
6. बड़ीसादड़ी ठिकाने के रियास्ती (प्रबंध) खर्च का ब्यौरा 264-267
7. बड़ीसादड़ी ठिकाने की लाग-बाग 268-276
8. ठिकाने के प्राचीन शिलालेख 277-282
9. महाराणा भीमसिंह के काल में सादड़ी पट्टे के गांव और पैदाइश 283-286
10. महाराणा सरूपसिंह कालीन दरबार की बैठक-व्यवस्था 287-293
11. महाराणा शंभूसिंह-कालीन दरबार की बैठक-व्यवस्था 294-301
12. बड़ीसादड़ी ठिकाने के राजराणा परिवार का वंशवृक्ष 302-304
13. संदर्भसामग्री-सूची 305-307
14. मेवाड़ राज्य के अन्य झाला ठिकाने 308-315
15. खास रुक्का की नकल 316
16. बड़ीसादड़ी ठिकाने के गांवों की फहरिस्त 317-322
17. मेवाड़ के महाराणाकालीन दशहरे के दरीखाने का नक्शा

◆◆◆